FOUR YEAR UNDER GRADUATE COURSE (FYUG)
(According to National Education Policy - 2020)

Department of Hindi
North-Eastern Hill University, Shillong
Date of approval in Academic Council: 30.05.2024

भूमिका

प्रस्तुत पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के अनुरूप पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रम संरचना के आलोक में भारतीय मूल्य परंपरा के अनुरूप उन्नत एवं समृद्ध राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्ध है। साहित्य शिक्षण के माध्यम से मानव मूल्यों के सृजन उसके विकास एवं विस्तार हेतु साहित्य का प्रयोग इस कार्यक्रम का अभिप्राय है। हिंदी साहित्य में प्रारंभ से ही उच्च मानव मूल्यों की निर्मिति एवं संचार की प्रवृत्ति पायी जाती है। आदिकालीन हिंदी साहित्य में जहाँ जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त एवं वैदिक ज्ञान परंपरा के निर्वहन की प्रवृत्ति दिखाई देती है वहीं लोकचेतना के समृद्ध एवं उर्जस्वित स्वरूप के दर्शन हमें साहित्य के विविध रूपों में परिलक्षित होते हैं। आदिकालीन थेरी गाथाओं में जहां स्त्री चिंतन की शक्ति दिखाई देती है वहीं जैन महापुराणों की परंपरा में भारत के प्राचीन आख्यानों की अनुश्रुति महसूस की जा सकती है। इसी प्रकार स्वर्णयुग में भक्ति परंपरा का विराट संभार परिलक्षित होता है। सगुण-निर्गुण, सूफी भक्ति परंपरा का लोक विस्तृत स्वरूप हिंदी साहित्य की अनमोल थाती है। ज्ञान और दर्शन का जो संयोग हिंदी साहित्य में प्राप्त होता है वही उसे वैश्विक स्वरूप प्रदान करता है।

रीतिकालीन साहित्य में जहाँ साहित्य की शास्त्रीय परंपरा का उन्मेष होता है वहीं आधुनिक कालीन साहित्य के माध्यम से वैश्विक स्तर पर समकालीन साहित्य बोध पैदा होता है। इसके माध्यम से जहाँ एक ओर हिंदी गद्य के विकास का विस्तृत परिप्रेक्ष्य निर्मित होता है वहीं वैश्विक स्तर पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन, विचारों के ग्रहण और चिंतन के क्षितिज के विस्तार का बोध होता है। अपने आधुनिक स्वरूप के निर्माण में हिंदी साहित्य स्वछंदतावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद सहित उत्तर आधुनिकता के विभिन्न पक्षों, उत्तर संरचनावाद, उत्तर उपनिवेशवाद आदि को ग्रहण करते हुए दार्शनिक चिंतन के नवीनतम विचारधाराओं जैसे स्त्री चिंतन, दलित चिंतन, आदिवासी चिंतन, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद आदि को अपने में समाहित करता है।

कार्यक्रम केंद्रित उपलब्धि

हिन्दी विषय में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को स्नातक की डिग्री प्रदान करना तो है ही साथ ही उन्हें संस्कारवान समाज के निर्माण के लिए तैयार करना भी है। इसके लिए दैनिक आचरण से लेकर समाज केंद्रित उन्नत व्यवहार की शिक्षा का उद्देश्य भी इस पाठ्यक्रम संरचना में शामिल है। साथ ही रोजगारों के सृजन एवं कौशल विकास के माध्यम से प्रत्येक युवा को समर्थ बनाना भी इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के विषय में नवीनतम शोध एवं ज्ञान के विस्तार का उद्देश्य भी पूरे कार्यक्रम की संरचना में केंद्रस्थ है। इसके साथ यह भी कहा जाता सकता है कि प्रत्येक युवा को राष्ट्र निर्माण की महती भूमिका में लगाना और उन्हें उन्नत समाज के निर्माण के प्रति जागृत करना भी इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

Four Year UG Programme
Course Details of the subject, Hindi

Paper Code	Title of the Paper	Credit	Contact Hours	Marks	Contact Hours
		Theory	Practical	Total	
THIRD SEMESTER					
HIN – 200	आदिकालीन हिंदी कविता	4	-	4	60
HIN – 201	हिंदी नाटक एवं एकांकी	4	-	4	60
MDC 210-219	Any of the available course as notified by the University from time to time	3	-	3	45
AEC 220-229	Any of the available course as notified by the University from time to time	2	-	2	30
SEC 230-239	Any of the available course as notified by the University from time to time			3	45-90
VTC 240-249	Any of the available course as notified by the University from time to time	1	3	4	105
				20	
FOURTH SEMESTER					
HIN – 250	हिंदी निबंध	4	-	4	60
HIN – 251	हिन्दी गद्य : विविध विधाएँ -1	4	-	4	60
HIN – 252	भाषा विज्ञान	4	-	4	60
HIN – 253	हिंदी आलोचना	4	-	4	60
VTC 260-269	Any of the available course as notified by the University from time to time	1	3	4	105
				20	
FIFTH SEMESTER					
HIN – 300	पूर्वोत्तर भारत का लोकसाहित्य	4	-	4	60
HIN – 301	हिंदी पत्रकारिता	4	-	4	60
HIN - 302	मध्यकालीन कविता	4	-	4	60
HIN - 302	मध्यकालीन कविता (Minor)	4	-	4	60
INT-303	Internship/Apprentice/ Community Engagementand Service field based learning or minor project	-	4	4	120
				20	
SIXTH SEMESTER					
HIN – 350	हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल	4	-	4	60
HIN – 351	प्रयोजनमूलक हिन्दी	4	-	4	60
HIN – 352	हिंदी गद्य : विविध विधाएँ -2	4	-	4	60
HIN – 353	पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी भाषा और साहित्य	4	-	4	60
VTC- 360-369	Any of the available course as notified by the University from time to time	1	3	4	105
				20	

SEVENTH SEMESTER					
HIN – 400	शोध प्रविधि	4	-	4	60
HIN – 401	हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्यकाल तक)	4	-	4	60
HIN – 402	भारतीय काव्यशास्त्र	4	-	4	60
HIN – 403	हिन्दी कथा साहित्य	4	-	4	60
HIN – 404	हिन्दी कथा साहित्य (Minor)	4	-	4	60
				20	
EIGHT SEMESTER					
HIN – 450	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4	-	4	60
HIN – 451	आधुनिक हिन्दी कविता (Minor)	4	-	4	60
HIN– 452	परियोजना कार्य/ लघु शोध प्रबंध, अथवा	-	12	12	360
HIN– 453*	आधुनिक भारतीय साहित्य	4	-	4	60
HIN– 454*	हिन्दी साहित्य की वैचारिकी	4	-	4	60
HIN– 455*	अनुवाद: सिद्धांत एवं व्यवहार	4	-	4	60
				20	

*** जो विद्यार्थी सप्तम सत्र तक समग्रत: 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेंगे उन्हें ही परियोजना कार्य हेतु अर्हता प्राप्त होगी। परियोजना कार्य न करने वाले विद्यार्थियों कोउसके स्थान पर तीन पत्रों (HIN-453, HIN-454 एवं HIN-455) का अध्ययन करना होगा।**

21. HINDI

प्रस्तावना

प्रस्तुत पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के अनुरूप स्नातक स्तर पर समस्त विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए नियोजित है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी जहां एक ओर उच्च शिक्षा हेतु आवश्यक अर्हता प्राप्त करेंगे वहीं दूसरी ओर उच्च मानवीय गुणों और मूल्यों के अनुशीलन करने में भी सक्षम होंगे। साथ ही राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए एक सर्वसमावेशी समाज के निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित करेंगे।

HIN-100: हिन्दी भाषा एवं लिपि

(Contact Hours: 60, Credits:4)

उद्देश्य : प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से हिन्दी भाषा के विविध रूपों एवं मानक देवनागरी लिपि का ज्ञान कराया जाएगा और साथ ही हिन्दी भाषा के विकास के विभिन्न चरणों एवं हिन्दी की प्रमुख बोलियों एवं लिपि के मानकीकरण से संबन्धित पाठों का अध्ययन होगा।

उपलब्धि: इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी भाषा के महत्त्व, राष्ट्रीय एकता में भाषा की भूमिका एवं हिन्दी तथा पूर्वोत्तर की भाषाओं के अंतर्संबंधों को समझने में सक्षम हो सकेंगे।

इकाई 1 भाषा: परिभाषा एवं विशेषताएँ, भाषा के विविध रूप, भाषा के विविध पक्ष, राष्ट्रीय एकता में भाषा की भूमिका।

इकाई 2 हिन्दी भाषा का विकास: प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ।

इकाई 3 आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ; हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ; पूर्वोत्तर की भाषाओं से अंतर्संबंध।

इकाई 4 नागरी लिपि: उद्भव एवं विकास, मानकीकरण, गुण-दोष एवं सुधार के उपाय।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी- अनन्तलाल चौधरी, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1992 ई.
2. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी- सुनीति कुमार चटर्जी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1954 ई.
3. हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि- धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1939 ई.
4. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास- उदय नारायन तिवारी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1995 ई.
5. भाषाविवेचन-भागीरथ मिश्र, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1990 ई.
6. भाषाशास्त्र की रूपरेखा- उदय नारायण तिवारी, भारती भण्डार, इलाहाबाद, 1963 ई.
7. सामान्य भाषा विज्ञान- बाबूराम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, 1984 ई.
8. हिन्दी लिपि की कहानी- डॉ. गुणाकर मुले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974 ई.

HIN-150: हिन्दी व्याकरण

(Contact Hours: 60, Credits:4)

उद्देश्य: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी व्याकरण की आधारभूत संरचना के मुख्य घटकों यथा- संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, प्रत्यय, उपसर्ग, समास आदि के साथ भाषा के विविध रूपों का परिचय प्रदान करना है।

उपलब्धि: इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी भाषा के लेखन एवं संवाद में विशेष योग्यता प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही हिन्दी भाषा की विविध भूमिकाओं का परिचय भी उन्हें प्राप्त होगा।

इकाई 1 हिन्दी रूपरचना : हिन्दी संज्ञा और उसके विविध भेद; सर्वनाम और उसके विविध भेद; क्रिया और उसके विविध भेद ।

इकाई 2 लिंग की परिभाषा और उसके विविध भेद; वचन की परिभाषा और उसके विविध भेद;प्रत्यय एवंउपसर्ग की परिभाषा और उसका स्वरूप;हिन्दीकारक; हिन्दी समास।

इकाई 3 विशेषणऔर उसके भेद; भाषा के विविध अवयव-वर्ण, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ ।

इकाई 4 भाषा के विविध रूप: सामान्य हिन्दी, परिनिष्ठित हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी, राष्ट्रभाषा हिन्दी, राजभाषा हिन्दी ।

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिन्दी व्याकरण-कामता प्रसाद गुरु**,** नागरी प्रचारिणी सभा**,** काशी,1997 **ई.**
2. हिन्दी व्याकरण मीमांसा- काशीराम शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996ई.
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन**,** दिल्ली, 2004 **ई.**
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी-डॉ. विजयपाल सिंह, संजय बुक सेंटर, वाराणसी, 1993**ई.**
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी- रवीन्द्र कुमार श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1975ई.
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी: सिद्धांत एवं प्रयोग- डॉ. दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन**,** दिल्ली, 2002 **ई.**
7. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका- डॉ. कैलाश नाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद**,** 2007 **ई.**
8. राजभाषा हिन्दी- कैलाश चंद भाटिया,प्रभात प्रकाशन, दिल्ली**,** 1994 ई.

स्नातक पाठ्यक्रम

द्वितीय वर्ष -तृतीय सत्र-प्रथम पत्र

HIN-200

आदिकालीन हिंदी कविता

क्रेडिट– 4/अंक-100

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के आदिकालीन कवियों के योगदान से अवगत कराना है।

उपलब्धि :

- इस पत्र का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थीगण सरहपा, गोरखनाथ, चंदबरदाई, विद्यापति तथा अमीर खुसरो की रचनाओं का परिचय मिलेगा।
- आदिकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों को समझ सकेंगे।
- आदिकालीन कवियों के हिंदी साहित्य में योगदान से परिचित हो सकेंगे।

इकाई 1 क. सरहपा- दोहाकोश – 2, 3, 6, 9
ख. गोरखनाथ – 7, 18, 19, 20

इकाई 2 चंदबरदाई - पद्मावती समय – प्रारंभिक सात छंद

इकाई 3 विद्यापति- पदावली – 1 एवं 2, वंशी माधुरी -3, रूप वर्णन -4

इकाई 4 अमीर खुसरो- पहेलियाँ- 1, 10, 34, 48, 53; मुकरियाँ- 145, 150, 153, 161, 164

पाठ्य पुस्तकें – 1. आदिकालीन काव्य- सं. डॉ. वासुदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. खुसरो की हिंदी कविता- ब्रजरत्नदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. सिद्ध सरहपा- डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
2. विद्यापति काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन- डॉ. अमूल्य चंद्र बर्मन, असम हिंदी प्रकाशन, गुवाहाटी
3. विद्यापति – शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. आदिकालीन और मध्यकालीन कवियों का आलोचनात्मक पाठ – हेमंत कुकरेती, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

द्वितीय वर्ष -तृतीय सत्र- द्वितीय पत्र

HIN-201

हिंदी नाटक एवं एकांकी

क्रेडिट– 4/ अंक- 100

उद्देश्य :

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के प्रमुख नाटकों एवं एकांकी का ज्ञान देना है।

उपलब्धि :

- इस पत्र के अध्ययन करने से विद्यार्थियों को नाटक एवं एकांकी के उद्भव विकास एवं उसके तत्त्वों का परिचय प्राप्त होगा।
- प्रमुख नाटकारों जैसे भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, रामकुमार वर्मा आदि की रचनाओं का ज्ञान मिलेगा।
- तत्कालीन समय एवं समाज की जानकारी प्राप्त होगी।

इकाई 1	नाटक एवं एकांकी के तत्त्व, हिंदी नाटक का उद्भव एवं विकास, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, नाटक और एकांकी साम्य-वैषम्य
इकाई 2	भारत दुर्दशा – भारतेंदु हरिश्चंद्र
इकाई 3	ध्रुवस्वामिनी – जयशंकर प्रसाद
इकाई 4	एकांकी - सीमारेखा (विष्णु प्रभाकर), चंपक (रामकुमार वर्मा), भोर का तारा (जगदीशचंद्र माथुर), बहू की विदा (विनोद रस्तोगी)

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिंदी नाटक का उद्भव और विकास, डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड संस प्रकाशन, दिल्ली
2. हिंदी नाटक- डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
3. आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच- सं. नेमीचन्द्र जैन, मैकमिलन प्रकाशन,नई दिल्ली
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र का रचना-संसार: एक पुनर्मूल्यांकन- डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव, साहित्य रत्नाकर, कानपुर
5. नाटककार भारतेंदु की रंग-परिकल्पना- सत्येंद्र तनेजा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. हिंदी एकांकी- सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

द्वितीय वर्ष - चतुर्थ सत्र-प्रथम पत्र

HIN-250

हिंदी निबंध

क्रेडिट – 4/ अंक- 100

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी के प्रमुख निबंधकारो एवं उनके निबंधों का ज्ञान देना है।

उपलब्धि :

- इसके अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकारों के निबंधों का अध्ययन कर सकेंगे।
- देश, समाज, संस्कृति को बहुत गहराई से समझेंगे।
- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में उच्च जीवन-मूल्यों का विकास होगा।

इकाई 1 साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है (बालकृष्ण भट्ट), कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता (महावीर प्रसाद द्विवेदी), कछुआ धरम (चंद्रधर शर्मा गुलेरी)

इकाई 2 उत्साह (आ. रामचंद्र शुक्ल), गेहूँ बनाम गुलाब (रामवृक्ष बेनीपुरी), अशोक के फूल (हजारीप्रसाद द्विवेदी)

इकाई 3 श्रृंखला की कड़ियाँ (महादेवी वर्मा), चेतना का संस्कार (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'), सदाचार का ताबीज (हरिशंकर परसाई)

इकाई 4 मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र), व्यापकता की गहराई (नामवर सिंह), चंद्र मादन (शिवप्रसाद सिंह)

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिंदी गद्य: विन्यास और विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार- राजकिशोर सिंह, प्रकाशन केंद्र, लखनऊ
3. ललित निबंध- केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
4. साहित्यिक निबंध- गणपतिचंद्र गुप्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. साहित्यिक निबंध- सं. त्रिभुवन सिंह, विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. हिंदी निबंध और निबंधकार- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

द्वितीय वर्ष - चतुर्थ सत्र-द्वितीय पत्र

HIN-251

हिन्दी गद्य: विविध विधाएँ - 1

क्रेडिट – 4/अंक- 100

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य हिंदी के विविध विधाओं का परिचय देना है। इसके साथ ही गद्यकाकारों की रचनाओं का भी परिचय दिया जायेगा।

उपलब्धि:

- इसके अध्ययन से विद्यार्थीगण कथेतर लेखन-शैली से अवगत होंगे।
- हिंदी के प्रमुख गद्यकारों से परिचित होंगे।
- हिंदी के कथेतर गद्य का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई 1 जीवनी: आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर):प्रारम्भिक पचास पृष्ठ

इकाई 2 संस्मरण: मैं आगे का जय-जयकार (माखनलाल चतुर्वेदी),हजारीप्रसाद द्विवेदी (बनारसीदास चतुर्वेदी)

इकाई 3 रेखाचित्र:गौरा (महादेवी वर्मा),चीड़ों पर चाँदनी (निर्मल वर्मा)

इकाई 4 पत्र साहित्य:नेमिचन्द्र जैन के नाम पत्र : एक से दस (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन'अज्ञेय')

पाठ्य पुस्तक – गद्य सौरभ (संपादक- डॉ. नागरत्ना एन. राव) राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली
अंधेर नगरी (भारतेन्दु हरिश्चंद्र), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. गद्य की नयी विधाओं का विकास- मज़दा असाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिंदी गद्य: विन्यास और विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिंदी का गद्य साहित्य- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. हिंदी के श्रेष्ठ रेखाचित्र- सं. डॉ. चौथीराम यादव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. छायावादोत्तर हिंदी गद्य साहित्य –विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. आधुनिक हिंदी गद्य का साहित्य- हरदयाल, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

7. अज्ञेय पत्रावली- सं.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साहित्य अकादमी,नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

द्वितीय वर्ष - चतुर्थ सत्र- तृतीय पत्र

HIN-252

भाषा विज्ञान

क्रेडिट – 4/अंक- 100

उद्देश्य :

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भाषा विज्ञान की सामान्य जानकारी देना है।

उपलब्धि :

- इसके अध्ययन से विद्यार्थीगण भाषा प्रयोग में वैज्ञानिकता का निर्वहन कर सकेंगे।
- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी दूसरी भाषाओं के प्रयोग को भी समझ सकेंगे।
- भारतीय भाषा परिवार, ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान संबंधी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई 1 भाषाविज्ञान : परिभाषा, विशेषताएँ, क्षेत्र, अध्ययन पद्धतियाँ, अध्ययन से लाभ

इकाई 2 भाषा परिवार : सामान्य परिचय, वर्गीकरण, भारोपीय परिवार की विशेषताएँ, भारतीय भाषा परिवार

इकाई 3 ध्वनि विज्ञान एवं रूप विज्ञान: सामान्य परिचय, ध्वनि एवं रूप परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ

इकाई 4 वाक्य विज्ञान एवं अर्थ विज्ञान : सामान्य परिचय, वाक्य एवं अर्थ परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. भाषाविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
2. भाषा विज्ञान की भूमिका- आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा, अनुपम प्रकाशन, पटना
3. हिंदी भाषा का इतिहास- डॉ. धीरेंद्र वर्मा, हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
4. हिंदी भाषा- भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
5. सामान्य भाषाविज्ञान- डॉ. बाबूराम सक्सेना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
6. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
7. भाषा शास्त्र तथा हिंदी भाषा की रूपरेखा- देवेंद्र कुमार शास्त्री, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. भाषा एवं भाषा विज्ञान- हनुमान प्रसाद शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. भाषा विज्ञान: हिंदी भाषा और लिपि- रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

द्वितीय वर्ष - चतुर्थ सत्र-चतुर्थ पत्र

HIN-253

हिंदी आलोचना

क्रेडिट-4/ अंक-100

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को साहित्य संबंधी हिंदी आलोचना का ज्ञान देना है। इसके अंतर्गत हिंदी आलोचना के उद्भव एवं विकास के अतिरिक्त प्रमुख युगों का परिचय दिया जायेगा।

उपलब्धि**:**

- विद्यार्थियों को भारतेंदु युगीन, द्विवेदीयुगीन, शुक्लयुगीन एवं शुक्लोत्तरयुगीन आलोचना की विभिन्न पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- हिंदी आलोचना के क्रमिक विकास का ज्ञान होगा।
- प्रमुख आलोचकों के अवदान से परिचित होंगे।

इकाई 1 हिंदी आलोचना: उद्भव एवं विकास, आलोचना के विविध रूप

इकाई 2 भारतेंदु एवं द्विवेदीयुगीन हिंदी आलोचना

इकाई 3 शुक्लयुगीन हिंदी आलोचना – आ. रामचंद्र शुक्ल, बाबू गुलाबराय, बाबू श्यामसुंदर दास

इकाई 4 शुक्लोत्तर हिंदी आलोचना – आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. हिंदी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार– रामचंद्र तिवारी – विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिंदी आलोचना : अतीत और वर्तमान- प्रभाकर माचवे, हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना-डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. आधुनिक हिंदी आलोचना के बीजशब्द – बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन
6. हिंदी आलोचना : दृष्टि और प्रवृत्तियाँ – मनोज पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. आलोचक का दायित्व – डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

तृतीय वर्ष - पंचम सत्र-प्रथम पत्र

HIN-300

पूर्वोत्तर भारत का लोकसाहित्य

क्रेडिट- 4/ अंक- 100

उद्देश्य:

इस पत्र में पूर्वोत्तर भारत के लोकसाहित्य का ज्ञान देना है। इसके अंतर्गत पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषआओं के लोकसाहित्य का अध्ययन अपेक्षित होगा।

उपलब्धि:

- इस अध्ययन से विद्यार्थीगण पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषाओं जैसे खासी, काकबरक, मिजो, न्यिशी, बोरो आदि की लोककथाओं का अध्ययन करेंगे।
- पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषाओं के लोकगीतों का ज्ञान मिलेगा।
- पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषाओं की लोक सुभाषित का ज्ञान मिलेगा।

इकाई 1	पूर्वोत्तर भारत का लोक साहित्य : लोक साहित्य का अर्थ, अवधारणा, मौखिक परंपरा, विविध विधाएँ
इकाई 2	पूर्वोत्तर भारत की लोककथाएँ:मांडाल डारे की कथा (गारो), उ क्लव (खासी), राइमा और साइमा (कॉकबरक), कछुए और बंदर की दोस्ती (मिज़ो), नीमा निया (न्यिशी), मनुष्य क्यों मरते हैं? (बोरो)
इकाई 3	पूर्वोत्तर भारत के लोकगीत: जूरपि गीत, पशु-पक्षी संबंधी गीत (न्यिशी), श्रम गीत, विदाई गीत (कॉकबरक), बिहू गीत, संस्कार गीत (असमिया), लोरी गीत (मणिपुरी)
इकाई 4	पूर्वोत्तर भारत के लोक सुभाषित- कॉकबरक, न्यिशी, असमिया, मणिपुरी, बोरो

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. मेघालय की लोककथाएँ- माधवेंद्र, श्रुति, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली
2. खासी लोककथाएँ- डॉ. फिल्मेका मारबानियांग, अमन प्रकाशन, कानपुर
3. नागालैण्ड की लोककथाएँ- माधवेंद्र, श्रुति, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली
4. कॉकबरक लोक साहित्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
5. न्यिशी लोक साहित्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
6. बोरो लोक साहित्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
7. लोक साहित्य की भूमिका- कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद
8. लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग- डॉ. श्रीराम शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

9. मिजो लोक साहित्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

तृतीय वर्ष -पंचम सत्र- द्वितीय पत्र

HIN-301

हिंदी पत्रकारिता

क्रेडिट- 4/ अंक- 100

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव और एवं विकास के साथ-साथ उसके विविध पक्षों का ज्ञान देने के साथ ही पत्रकारिता के क्षेत्र में विद्यार्थियों को रोजगार के लिए तैयार करना भी है।

उपलब्धि :

- हिंदी पत्रकारिता के उद्भव और विकास का बोध प्राप्त होगा।
- पत्रकारिता की विविध प्रक्रियाओं का ज्ञान मिलेगा।
- मीडिया लेखन के विविध पक्षों का ज्ञान मिलेगा।
- मीडिया में सृजनात्मक लेखन के तत्वों से परिचित हो सकेंगे।

इकाई 1	पत्रकारिता: अर्थ एवं परिभाषा, उद्भव एवं विकास,समाचार संकलन, लेखन एवं संपादन, शीर्षक, संवाददाता के कार्य
इकाई 2	सम्पादन प्रक्रिया एवं साजसज्जा: अवधारणा, उद्देश्य, तत्त्व, समाचार-मूल्यांकन एवं सम्पादन, प्रूफरीडिंग, साजसज्जा-गुण एवं दोष
इकाई 3	मीडिया लेखन: समाचार लेखन, अनुवर्तन समाचार लेखन, स्तंभ लेखन, संपादकीय लेखन
इकाई 4	सर्जनात्मक लेखन: कार्टून लेखन, साक्षात्कार, फीचर लेखन, पुस्तक समीक्षा

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास- जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिंदी पत्रकारिता- कृष्णबिहारी मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. पत्रकारिता: परिवेश और प्रवृत्तियाँ – पृथ्वीनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. पत्रकारिता के नए आयाम- एस. के. दुबे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श –कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. हिंदी पत्रकारिता का प्रतिनिधि संकलन- तरुशिखा सुरजन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. पत्रकारिता: विधाएँ वित्त एवं संभावनाएँ- डॉ. मधुसूदन त्रिपाठी, गणपति प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

तृतीय वर्ष - पंचम सत्र- तृतीय पत्र

HIN-302)

मध्यकालीन कविता

क्रेडिट–4/ अंक- 100

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भक्तिकाल के प्रतिनिधि रचनाकारों का परिचय देना है। इसके साथ ही राम भक्तिधारा, कृष्ण भक्तिधारा, निर्गुण भक्ति एवं सूफी भक्ति की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय देना भी अभिप्रेत है।

उपलब्धि :

- इस पत्र के माध्यम से निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवियों की रचनाओं का अध्ययन कर सकेंगे।
- सूफी साहित्य, साहित्यकार एवं उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- रीतिकाल की विभिन्न धाराओं का परिचय मिलेगा।
- रीतिकाल के प्रमुख रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं के अध्ययन का अवसर मिलेगा।

इकाई 1	अ.	कबीर: कबीर ग्रंथावली – सं.डॉ. श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (पाठ्य अंश - साखी- गुरुदेव को अंग, पद- 1, 2, 3, 11, 16, 20, 25, 33)
	ब.	जायसी: जायसी ग्रंथावली- सं.आ. रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (पाठ्य अंश - नागमती वियोग खंड: प्रारम्भ से दस दोहों तक)
इकाई 2	अ.	सूरदास : भ्रमरगीतसार- सं. आ. रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (पाठ्य अंश: पद सं. 23, 25, 34, 38, 41, 45, 50, 56)
	ब.	गोस्वामी तुलसी दास: रामचरितमानस- गीता प्रेस, गोरखपुर (पाठ्य अंश : उत्तरकाण्ड से दोहा-चौपाई 117 से 124 तक)
इकाई 3	अ.	केशवदास- रामचंद्रिका से 'वनमार्ग में राम'

ब. बिहारी: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी
(पाठ्य अंश : दोहा सं 1, 3,7, 10, 15, 21, 25, 32, 34, 36)

इकाई 4 अ. मतिराम: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी
(पाठ्य अंश : पद सं 1, 3, 6, 9, 12)

ब. घनानंद : रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी।
(पाठ्य अंश : प्रारंभ से 05 पद)

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. कबीर- डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई
2. कबीर मीमांसा – डॉ. रामचंद्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. त्रिवेणी- आ. रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. सूर और उनका साहित्य- डॉ. हरबंश लाल शर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
5. जायसी- विजय देव नारायण साही,हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

तृतीय वर्ष - पंचम सत्र

HIN-302 (Minor)

मध्यकालीन कविता

क्रेडिट–4/ अंक- 100

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भक्तिकाल के प्रतिनिधि रचनाकारों का परिचय देना है। इसके साथ ही राम भक्तिधारा, कृष्ण भक्तिधारा, निर्गुण भक्ति एवं सूफी भक्ति की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय देना भी अभिप्रेत है।

उपलब्धि :

- इस पत्र के माध्यम से निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवियों की रचनाओं का अध्ययन कर सकेंगे।
- सूफी साहित्य, साहित्यकार एवं उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- रीतिकाल की विभिन्न धाराओं का परिचय मिलेगा।
- रीतिकाल के प्रमुख रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं के अध्ययन का अवसर मिलेगा।

इकाई 1	अ.	कबीर: कबीर ग्रंथावली – सं.डॉ. श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (पाठ्य अंश - साखी- गुरुदेव को अंग, पद- 1, 2, 3, 11, 16, 20, 25, 33)
	ब.	जायसी: जायसी ग्रंथावली- सं.आ. रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (पाठ्य अंश - नागमती वियोग खंड: प्रारम्भ से दस दोहों तक)
इकाई 2	अ.	सूरदास : भ्रमरगीतसार- सं. आ. रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (पाठ्य अंश: पद सं. 23, 25, 34, 38, 41, 45, 50, 56)
	ब.	गोस्वामी तुलसी दास: रामचरितमानस- गीता प्रेस, गोरखपुर (पाठ्य अंश : उत्तरकाण्ड से दोहा-चौपाई 117 से 124 तक)
इकाई 3	अ.	केशवदास- रामचंद्रिका से 'वनमार्ग में राम'
	ब.	बिहारी: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी (पाठ्य अंश : दोहा सं 1, 3,7, 10, 15, 21, 25, 32, 34, 36)
इकाई 4	अ.	मतिराम: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी (पाठ्य अंश : पद सं 1, 3, 6, 9, 12)
	ब.	घनानंद : रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी। (पाठ्य अंश : प्रारंभ से 05 पद)

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. कबीर- डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई
2. कबीर मीमांसा – डॉ. रामचंद्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. त्रिवेणी- आ. रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. सूर और उनका साहित्य- डॉ. हरबंश लाल शर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
5. जायसी- विजय देव नारायण साही,हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

तृतीय वर्ष -षष्ठ सत्र - प्रथम पत्र

HIN-350

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल

क्रेडिट– 4/अंक – 100

उद्देश्य: इस पत्र के माध्यम से हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का परिचय प्रदान किया जाएगा। इसके अंतर्गत विभिन्न कालों के विभाजन, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख रचनाकारों का परिचय दिया जायेगा।

उपलब्धि:

- आधुनिक काल के हिंदी साहित्य की विकास यात्रा संबंधित ज्ञान देना है।
- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को आधुनिक काल का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।
- इस काल के साहित्यिक विकास से भी अवगत होंगे।
- हिंदी गद्य की विविध विधाओं एवं उनके रचनाकारों का परिचय मिलेगा।

इकाई 1 आधुनिक काल: परिस्थितियाँ,हिंदी गद्य का विकास; हिंदी नवजागरण; सामाजिक संस्थाएं, पत्रकारिता, फोर्ट विलियम कॉलेज एवं ईसाई मिशनरियों की भूमिका

इकाई 2 आधुनिककाव्य के विविध सोपान: भारतेंदु युग,द्विवेदी युग,छायावाद,प्रगतिवाद,प्रयोगवाद, नई कविता,समकालीन कविता: परिचय एवं प्रवृत्तियाँ

इकाई 3 गद्य की विविध विधाएँ - एक : कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध एवं आलोचना

इकाई 4 गद्य की विविध विधाएँ - दो : जीवनी, आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत, रेखाचित्र एवं संस्मरण

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास- संपादक- डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का इतिहास- लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास – भगीरथ मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

तृतीय वर्ष -षष्ठ सत्र - द्वितीय पत्र

HIN-351

प्रयोजनमूलक हिन्दी

क्रेडिट-4/ अंक- 100

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य हिंदी भाषा के विविध रूपों, उसकी अलग-अलग भूमिकाओं जैसे परिनिष्ठित हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी, व्यावसायिक हिन्दी आदि का व्यापक परिचय देना है।

उपलब्धि:

- हिन्दी भाषा के विविध रूपों का परिचय मिलेगा।
- विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिंदी और कार्यालयी हिंदी के विविध पक्षों का अध्ययन कर सकेंगे।
- व्यावसायिक हिंदी के उपयोग का अध्ययन भी इसमें सम्मिलित है।
- रोजगार प्राप्ति के योग्य बन सकेंगे।

इकाई 1	भाषा के विविध रूप : सामान्य हिन्दी, परिनिष्ठित हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी, राष्ट्रभाषा हिन्दी, राजभाषा हिन्दी, राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति
इकाई 2	प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध आयाम : कार्यालयी हिन्दी, जनसंचार की हिन्दी, वाणिज्य एवं विज्ञापन की हिन्दी, विज्ञान एवं कंप्यूटर की हिन्दी
इकाई 3	कार्यालयी हिन्दी अनुप्रयुक्ति क्षेत्र: पत्र लेखन एवं उसके प्रकार, प्रारूप लेखन, टिप्पण, प्रतिवेदन, संक्षेपणएवं पल्लवन, परिपत्र, सूचना, अधिसूचना, अनुस्मारक
इकाई 4	पारिभाषिक शब्दावली:आवश्यकता एवं स्वरूप, निर्माण के सिद्धांत एवं प्रक्रिया

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिन्दी व्याकरण-कामता प्रसाद गुरु**,** नागरी प्रचारिणी सभा**,** काशी
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन**,** दिल्ली
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी-डॉ. विजयपाल सिंह, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी- रवीन्द्र कुमार श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

5. प्रयोजनमूलक हिन्दी: सिद्धांत एवं प्रयोग- डॉ. दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

तृतीय वर्ष -षष्ठ सत्र- तृतीय पत्र

HIN-352

हिन्दी गद्य: विविध विधाएँ - 2

क्रेडिट – 4/ अंक- 100

उद्देश्य:

इस पत्र में गद्य की विविध विधाओं जैसे- जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत्तांत, व्यंग्य लेखन, रिपोर्ताज एवं पत्र साहित्य का अध्ययन किया जाएगा।

उपलब्धि:

- इस अध्ययन से विद्यार्थीगण कथेतर लेखन-शैली से अवगत होंगे।
- वे कई लेखकीय व्यक्तित्त्व की विशेषताओं से परिचित होंगे।
- विभिन्न रचनाकारों की रचनाओं का बोध होगा।

इकाई 1 आत्मकथा : क्या भूलूँ क्या याद करूँ (हरिवंशराय बच्चन) प्रारम्भिक 50 पृष्ठ

इकाई 2 यात्रावृत्तांत : मेरी जर्मनी यात्रा (रामधारी सिंह दिनकर),मेरी बद्रीनाथ यात्रा (विष्णु प्रभाकर)

इकाई 3 व्यंग्य लेखन : एक मध्यवर्गीय कुत्ता, विकलांग श्रद्धा का दौर, वैष्णव की फिसलन (हरीशंकर परसाई)

इकाई 4 प्रहसन :अंधेर नगरी (भारतेन्दु हरिश्चंद्र)

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. गद्य की नयी विधाओं का विकास- मज़दा असाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिंदी गद्य: विन्यास और विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिंदी का गद्य साहित्य- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. हिंदी के श्रेष्ठ रेखाचित्र- सं. डॉ. चौथीराम यादव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. छायावादोत्तर हिंदी गद्य साहित्य –विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. आधुनिक हिंदी गद्य का साहित्य- हरदयाल, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

तृतीय वर्ष - षष्ट सत्र-चतुर्थ पत्र

HIN-353

पूर्वोत्तर भारत में हिंदी भाषा एवं साहित्य

क्रेडिट- 4/ अंक- 100

उद्देश्य:

इस पत्र का मुख्य उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत में हिंदी भाषा की स्थिति एवं हिंदी भाषा में उपलब्ध साहित्य से विद्यार्थियों को अवगत कराना है।

उपलब्धि:

- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को पूर्वोत्तर भारत में संपर्क भाषा हिंदी का ज्ञान प्राप्त होगा।
- शिक्षा के माध्यम की भाषा और विभिन्न संस्थाओं के रूप में हिंदी की स्थिति का ज्ञान होगा।
- पूर्वोत्तर की भाषाओँ के अनुवाद का ज्ञान होगा।
- यहाँ के हिंदी साहित्य का बोध विकसित होगा।

इकाई 1 पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की स्थिति : संपर्क भाषा के रूप में, शिक्षा के माध्यम के रूप में, विभिन्न संस्थाओं में हिंदी का अनुप्रयोग

इकाई 2 पूर्वोत्तर भारत में हिंदी पत्रकारिता : समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ (साहित्यिक और साहित्येतर) संचार माध्यमों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति (आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अन्य जन माध्यम)

इकाई 3 पूर्वोत्तर भारत का हिंदी साहित्य: मायावी कामरूप, कामाख्या क्षेत्रे गुवाहाटी नगरे (पाठ्यपुस्तक- ब्रह्मपुत्र के किनारे किनारे: सांवरमल सांगानेरिया, वाणी प्रकाशन)

इकाई 4 पूर्वोत्तर भारत का हिंदी में अनूदित साहित्य: क. गद्य साहित्य- सड़क की यात्रा (मामंग देई),सूर्यास्त (एच. इलियास), शिक्षक (सर बिदोर सिंह क्रो), जड़ें (नेचुरियाज़ो चुचा), मेरे मन मंदिर की स्वर्ण-दीपशिखा (एन. टी. लेपचा)

(पाठ्यपुस्तक- पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियाँ- संपा: रमणिका गुप्ता)

ख. कविता- गारो- जन्मभूमि के प्रति समर्पण, याद करूँगा मैं तुम्हें (हावर्ड डेनिसन मोमिन,कविता कोश), कॉकबरक-सूखे के बाद वर्षा, गरिया (नंदकुमार देबबर्मा, सुनिल देबबर्मा) आओ- खाली जगहें, मेरा अंतिम गीत (तेमसुला आओ) खासी- को लाउ किंताङ, शोषण (प्रो. स्ट्रीम्लेट ड्खार) असमिया- मैं अपने शवों को लेकर भाग गया, जीवन सच में कितना सुंदर हो सकता है (नीलिम कुमार, प्राणजित बोरा)

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. कॉकबरक की प्रतिनिधि कविताएँ- अनुवादक डॉ. मिलन रानी जमातिया, मानव प्रकाशन, कोलकाता
2. माँ के अनमोल रत्न- अनुवादक: जीन एस. ड्खार, सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
3. अद्यतन असमिया कविता-संचयन- अनुवादक- रूमी लश्कर बोरा, अनुवादक संपादन- देवेंद्र कुमार देवेश, विजया बुक्स, नई दिल्ली
4. हिंदी यात्रा साहित्य में भारत का पूर्वोत्तर- सुनील कुमार, बोधि प्रकाशन, जयपुर

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)